छोटी बातें

एन

जब दिन ठंडे और गहरे हो रहे थे जब श्रीमती बी ने अपने पति और खुद के लिए एक कम्बल बुनने का फैसला किया. वह अपने लिविंग रूम के दूर कोने में झूलने वाली कुर्सी पर बैठ गईं और उन्होंने बुनना शुरू किया.

उस रात जब मिस्टर बी सर्दियों की फसल बोने के बाद घर आए, तब तक श्रीमती बी ने कम्बल का एक चौकोन पूरा कर लिया था.

"प्रिय," श्री बी ने पूछा, "तुम क्या कर रही हो?"

"मैं इन सर्दियों की ठंडी रातों के लिए एक कम्बल बुन रही हूं," श्रीमती बी ने जवाब दिया और उन्होंने अपनी बुनाई जारी रखी.

"यह तो बहुत अच्छी बात है," श्री बी ने कहा, और उन्होंने अपनी पत्नी को काम करने के लिए अकेला छोड़ दिया. जब पत्नी काम करती थीं तो श्री बी उन्हें कभी परेशान नहीं करते थे. क्योंकि वो बहुत भूखे थे, इसलिए उन्हें रात के खाने का इंतजार था. पर खाने की प्रतीक्षा करने जैसी छोटी चीजें, श्री बी को कभी परेशान नहीं करती हैं.

कभी नहीँ.

जब श्री बी सुबह बिस्तर से उठे तो उन्होंने पाया कि श्रीमती बी तभी भी बैठक वाले कमरे में बुनाई कर रही थीं.
"श्रीमती बी, प्रिय," उन्होंने कहा. "क्या तुम कल रात बिस्तर पर सोने नहीं आईं?“
"नहीं," श्रीमती बी ने काम से आँखें उठाए बिना जवाब दिया. "मैं बर्फ गिरने से पहले इस कम्बल को खत्म करना चाहती हूँ."
और हालांकि श्री बी ने रात का डिनर नहीं खाया था, तब भी उन्होंने सुबह के नाश्ते और दोपहर के भोजन का इंतजार करने का फैसला किया. नाश्ता इतनी छोटी चीज थी, और छोटी-छोटी चीजें कभी भी श्री बी को परेशान नहीं करती थीं.
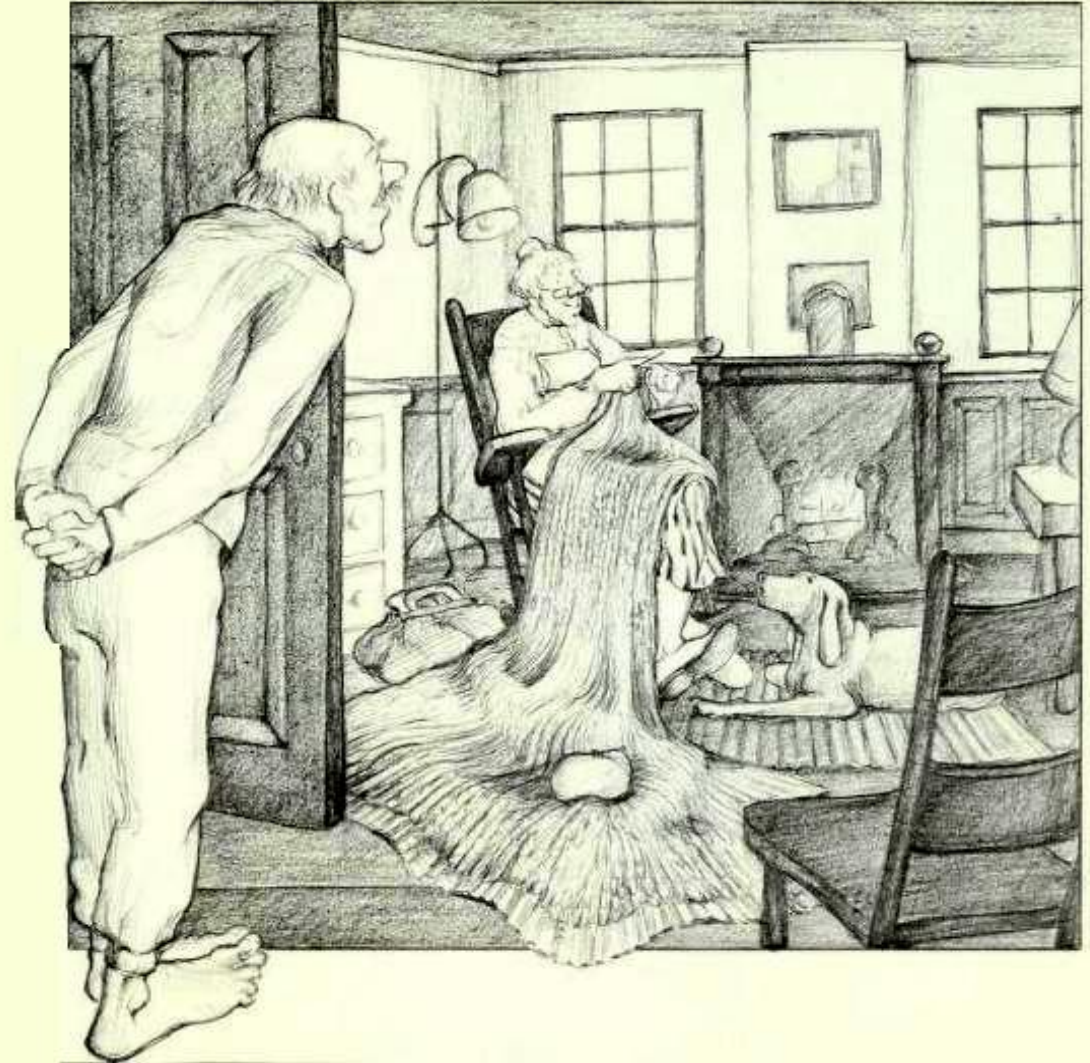
लेकिन उन्हें दोपहर का
भोजन भी नहीं मिला,
इसलिए श्री बी ने नाश्ते और
दोपहर के भोजन का रात
तक इंतजार करने का फैसला
किया. और जब उन्हें रात का
भोजन भी नहीं मिला तब
मिस्टर बी ने खुद अपना
खाना बनाने का फैसला
किया.

"मेरी प्रिय," मिस्टर बी ने
श्रीमती बी से कहा, "मैंने
खाने के लिए कुछ बनाया है.
क्या तुम मेरे साथ खाने
आओगी?"
"नहीं, नहीं," श्रीमती बी ने
जवाब दिया, "मुझे अभी
काम करना है."
इसलिए मिस्टर बी ने अकेले
ही खाना खाया और बिस्तर
पर सोने चले गए.

अगली सुबह, मिस्टर बी ने खुद कुछ नाश्ता बनाया. फिर उन्होंने पाया कि श्रीमती बी के कम्बल से अब बैठक वाला कमरा पूरी तरह भर गया था. वह अपनी पत्नी को केवल दूर कोने में से देख सकते थे. वो अभी भी बड़ी तेजी से काम कर रही थीं.

"प्रिय श्रीमती बी," उन्होंने कहा, "मैं देख रहा हूं कि कम्बल का एक छोटा सा चौकोन अब पूरे कमरे के नाप का हो गया है."

"धन्यवाद," श्रीमती बी ने सिलाई करते हुए बिना सर उठाए जवाब दिया.

फिर श्री बी ने अपनी पत्नी को दूर से ही एक चुम्बन दिया और वे फिर अपने खेत में चले गए. वो अब बैठने वाले कमरे में भी नहीं घुस सकते थे. पर उस जैसी छोटी चीजें श्री बी को कभी परेशान नहीं करती थीं.

फिर यही सिलसिला ज़ारी रहा. श्री बी खेत में काम करते और अपना भोजन बनाते और सो जाते. श्रीमती बी बस बुनती रहतीं, बुनती रहतीं, और सिर्फ बुनती रहतीं. जब कम्बल बढ़ते-बढ़ते रसोई और बेडरूम में घुसा तो भी श्री बी ने उसका कोई बुरा नहीं माना.

"कितनी सुविधाजनक बात है कि मैं अपने बिस्तर पर ही उस कम्बल को इस्तेमाल कर सकता हूं जिसे मेरी पत्नी बना रही हैं," उन्होंने कहा.

वो थोड़े चिंतित तब हुए जब उन्हें अपना पलंग ही नहीं मिला, क्योंकि अब सब जगह श्रीमती बी के कम्बल ने ही घेर ली थी.

लेकिन फिर श्री बी ने सोचा, "ठीक है, यह कितनी सुविधाजनक बात है. अब मुझे पलंग और बिस्तर की ज़रूरत भी नहीं है क्योंकि मैं अब कम्बल पर कहीं भी दुबक के सो सकता हूं."

और उन्होंने वैसा ही किया.
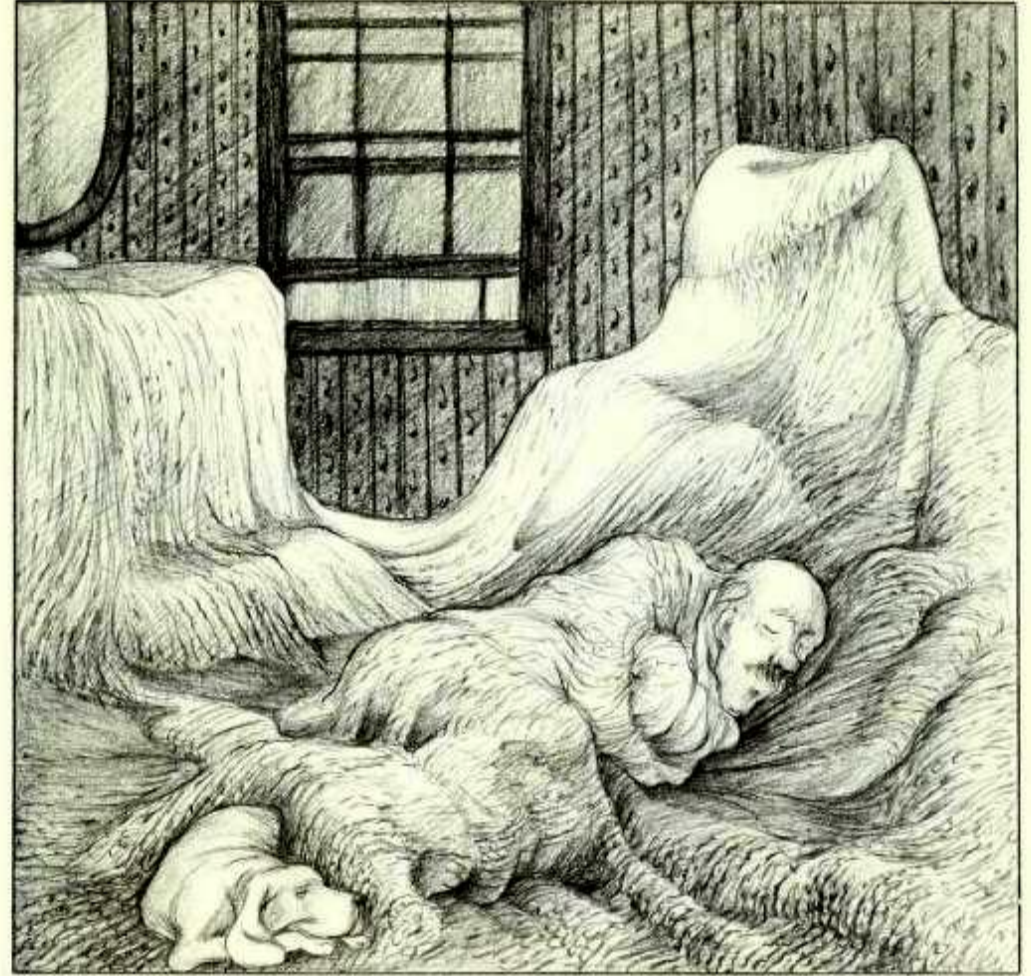
फिर एक दिन उनके कुछ पड़ोसी मिलने के लिए आए. उन्हें सड़क से ही चिल्लाना पड़ा क्योंकि अब तक श्रीमती बी के कम्बल ने दरवाजे, खिड़कियों, बरामदे आदि सभी को अपनी आगोश में लपेट लिया था.

"गुड मॉर्निंग," श्री बी ने पड़ोसियों से मिलने के बाद कहा.

"गुड मॉर्निंग," उनके पड़ोसियों में से एक ने कहा. "आपकी पत्नी ने एक ऐसा कम्बल बनाया है जिससे आपका पूरा घर भर गया है."
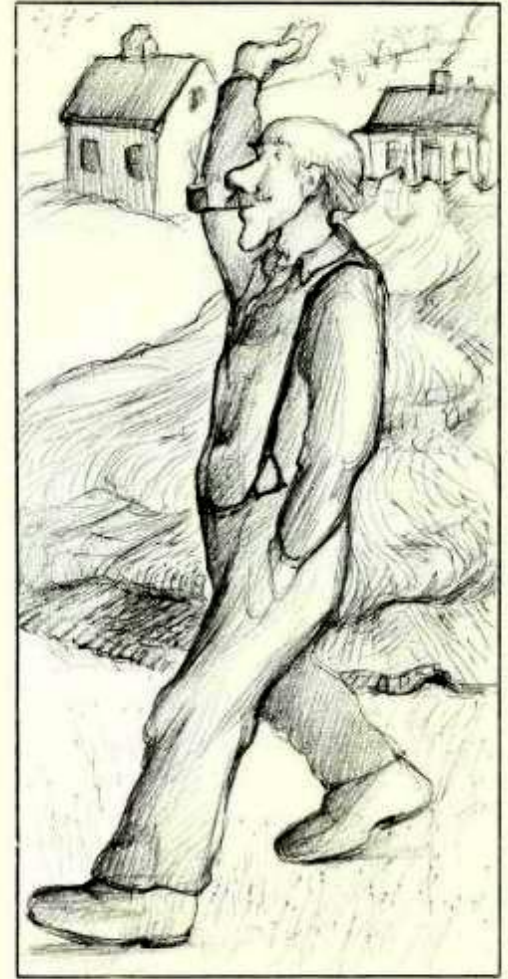
"और उस कम्बल का कुछ हिस्सा अब घर के बाहर भी निकल रहा है," श्री बी ने मुस्कुराते हुए कहा. "क्या यह आपको परेशान नहीं करता है?" एक अन्य पड़ोसी ने पूछा. "नहीं, नहीं, नहीं," श्री बी ने मुस्कुराते हुए कहा, "ऐसी छोटी-छोटी चीजें मुझे कभी परेशान नहीं करती हैं."

अब श्रीमती बी का कम्बल फूलों के बगीचे, पहाड़ी के नीचे, खलिहान के ऊपर और आटा चक्की तक चला गया था. फिर एक दिन जब श्री बी बाहर गए तो उन्हें अपना घर खोजने में करीब आधा दिन लगा. कम्बल के ढेर पर उन्हें सावधानी से चलना पड़ा क्योंकि उसके नीचे उनका ट्रैक्टर खड़ा था और झूला लटका था. बड़ी मुश्किल से वो अपनी रसोई की खिड़की से रेंगकर घर में घुसे. लेकिन अंदर उन्हें श्रीमती बी कहीं नहीं दिखीं. पूरे घर के अंदर कम्बल के सिर्फ टीले और पहाड़ ही दिखाई दिए.

"अरे मेरी प्रिय पत्नी कहाँ हो?" मिस्टर बी ने मधुर आवाज़ मे पुकारा. लेकिन उन्हें कोई जवाब नहीं मिला.
"कद्दू?" उन्होंने थोड़ा जोर से पुकारा.
"लवली!" उन्होंने कहा, और फिर उनका चेहरा एकदम लाल हो गया.
रात का खाना न मिलना ठीक था और बिस्तर नहीं मिलना भी ठीक था. यहां तक कि खेत का न होना भी ठीक था. लेकिन अब मिस्टर बी की पत्नी भी नहीं थीं.
"मैं इस से अधिक नहीं सह सकता," श्री बी रोते हुए कहा. "कृपा करके अब आप इस कंबल को बुनना बंद करें."
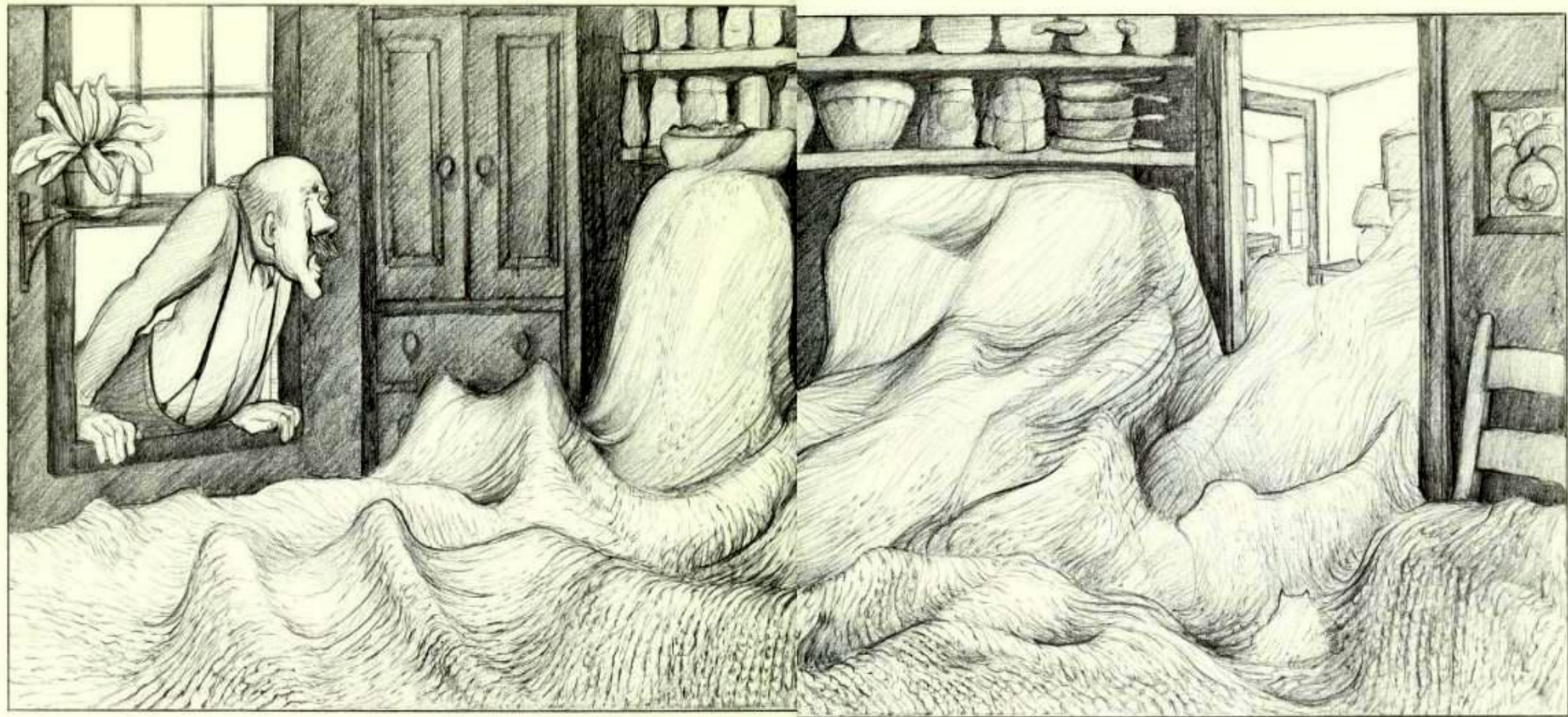
फिर श्रीमती बी ने अपनी बुनाई की सिलाइयों को गिरा दिया और तुरंत खड़ी हो गईं, क्योंकि उन्होंने पहले कभी भी श्री बी को गुस्सा होते नहीं सुना था.

"क्या मुझसे कोई गलती हुई?" श्रीमती बी ने पूछा.

"आपके कम्बल ने," श्री बी ने चारों ओर इशारा करते हुए कहा. "खलिहान, कुत्ते और बिल्ली सबको ढँक दिया है. और अब वो मुझे भी परेशान कर रहा है."

"क्यों, प्रिय," श्रीमती बी ने आश्चर्यचकित होकर कहा, "छोटी चीजें आमतौर पर आपको परेशान नहीं करती थीं."

"लेकिन प्रिय," मिस्टर बी ने जवाब दिया, "अब आपका कम्बल एक बड़ी चीज बन गया है."

श्रीमती बी ने चारों ओर देखा, और जहाँ तक वो देख पाईं वहां तक उन्हें कम्बल और कम्बल ही दिखाई दिया. "अरे बाप रे!" श्रीमती बी ने मुस्कुराते हुए कहा, "यह तो बहुत बड़ा है. मुझे इसका कोई एहसास ही नहीं हुआ. लेकिन मुझे लगता है कि हम इस बड़े कम्बल के छोटे-छोटे टुकड़े कर सकते हैं. फिर हम अपने सभी पड़ोसियों को एक या दो कम्बल दे सकते हैं. हाँ, उसके बाद भी सर्दियों के लिए हमारे पास काफी कम्बल बचेंगे."

और उन्होंने यही किया.

फिर उन्होंने अपने सभी जान-पहचान वालों को एक-एक कंबल दिया. उसके बाद उन्होंने बचे कम्बलों का पिछले दरवाजे के बाहर एक ढेर लगा दिया. कम्बलों का ढेर इतना ऊंचा था कि उसके ऊपर से कुछ दिखाई ही नहीं देता था. अक्सर सुबह को टहलते समय श्री बी उन कम्बलों के ढेर से टकराते थे.

लेकिन, आप जानते ही हैं, कि ऐसी छोटी चीजें उन्हें कभी परेशान नहीं करती थीं.

समाप्त